Biradar M.B.

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCItPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

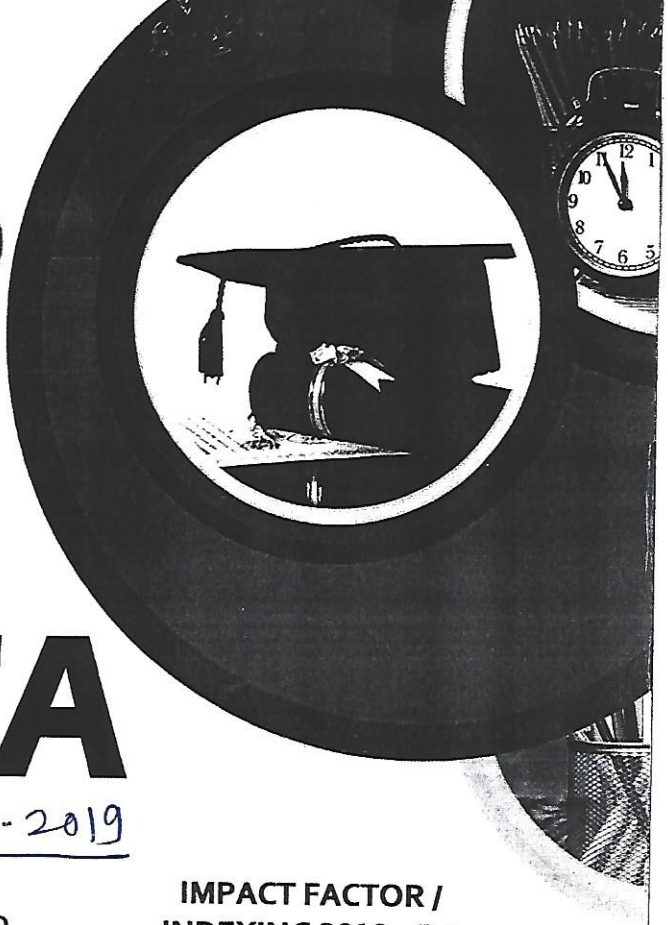

AJANTA

March - 2019

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - II / Hindi Part - II / English Part - II

IMPACT FACTOR / INDEXING 2018 - 5.5
www.sjifactor.com

१०. अलौकिक प्रतिभा की धनी : सावित्रीबाई फुले

प्रा. डॉ. एम. बी. बिराजदार
जवाहर कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर, ता. तुळजापूर, जि. उस्मानाबाद.

आधुनिक काल की एक सशक्त कवयित्री के रुप में सावित्रीबाई फुले का मराठी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। स्त्री दास्यमुक्ति आंदोलन की प्रणेती सावित्रीबाई फुले युगस्त्री थी। सेवावृति, धैर्य आदि असामान्य गुणों के साथ सावित्रीबाई एक प्रतिभासंपन्न कवयित्री थी।

सामाजिक कविता का जनकत्व केशवसुत को प्रदान किया जाता है, लेकिन केशवसुत से पहले 'काव्यफुले' (१८५४) लिखनेवाली सावित्रीबाई की सामाजिक भाईचारे को सामने रखते हुए अग्रपूजा का स्थान देना चाहिए। केशवसुत की श्रेष्ठता सावित्रीबाई के पास भले ही न हो लेकिन तत्कालीन सामाजिक वास्तविकता को देखने की नयी। दृष्टि उनके पास दिखाई देती है।

'काव्यफुले' (१८५४) 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' (१८९२) आदि दो काव्य संग्रह उनके प्रकाशित हुए है। इन काव्य संग्रहों का विचार किया जाय तो सावित्रीबाई एक उत्तम कवयित्री थी ऐसा निर्विवाद कहा जा सकता है। १८४८ ई. के १ जनवरी को ज्योतीराव ने पुणे के बुधवार पेठ में तात्यासाहेब भिडें के बाडे में महाराष्ट्र में पहली लडकियों की पाठशाला शुरुआत की. लडकियों को पढाने का काम ज्योतीराव ने सावित्री को सौंप दिया। इस कार्य को उतने ही हिम्मत से सावित्री ने स्वीकार कर लिया। मिसेस मिचेल इस मिशनरी महिला ने सावित्री को अध्यापन के लिए आवश्यक शिक्षा देकर उनके उत्साह को बढाया।

सावित्रीबाई स्कूल में बच्चों को पढाते समय गीतों की रचना करती थी। उस काल में किताब उपलब्ध न होने के कारण कथा, कविता मन से ही रचकर बच्चों को पढाया जाता था। ज्योतीराव के तालीम में सावित्री की सुप्त प्रतिभा के अंकुर फुट पडे। सावित्री रचित कविता, गीतों का संकलन कर स्वयं ज्योतीराव ने काव्यफुले कविता संग्रह १८५४ ई, में शिळा प्रेस मुंबई में छपकर प्रकाशित किया।

काव्यफुले में प्रकृति, समाज, प्रार्थना, शिक्षण, जातिप्रथा, इतिहास बोध, आदि विषयों पर सावित्रीबाई ने काव्य रचना की है। डॉ. माधवी खरात के शब्दों में- काव्यफुले में कीचड में दबे हुए मानवीय भावनाओं का चित्रण है।[१]

बालकांना सदुपयोग कविता में छात्रों को सुयोग्य उपदेश देकर ज्ञान का महत्व विशद किया है। शिक्षण कविता में प्रकट विचार भी उतने ही मौल्यवान है। वैचारिक कविता के साथ साथ प्रकृति प्रेम भी महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। सदा हसते रहो और सभी पर प्रेम करो ये प्रकृति- चित्रण को देखने के बाद पता चलता है-

''सुंदर सृष्टी सुंदर मानव। सुंदर जीवन सारे।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

सद्भावाच्या पर्जन्याने बहरुन टाकू वारे।।''[२]

माझी जन्मभूमी कविता में सावित्रीबाई ने अपने जन्मगाँव नायगाँव के आँचलिकता का सुंदर और जीवंत चित्रण किया है। ऐसे प्रकृति रमणीय भूमि में रहनेवाले इन्सान मन से बडे हैं, वहाँ का किसान बलिराजा है बलिराजा का चित्र खींचते हुए वह कहती है-

''म्हणे बांध शेती पहा या विहिरी
पहा पीक माझे कशी छान ज्वारी
मला गौरकान्ता तशी गोड पुत्री
असा दंभ ज्याला नसे तो सुपात्री।।''[३]

शुद्र और अतिशुद्रों के परिस्थिति के संबंध में सावित्रीबाई को अत्यंत करुणा आती थी। दारिद्रय और अज्ञान से ही उनका मन असंवेदनशील हुआ है। वे दु:ख को सुख के रुप में अपनाती है-

''सुखाची नसते हाव दु:खास सुख मानती
विधाते निर्मित जैसे रहावे बोध सांगवी
ज्ञानाची नसती डोळे म्हणोति न दिसे दु:ख
स्वावलंबी नसे शुद्र स्विकारती पशु सुख''[४]

अपने स्वार्थ के लिए विषम समाज का निर्माण करनेवाले धर्म-पंडित और सनातनी लोगों का धिक्कार करती हैं।

ज्योतीराव-सावित्री व्यक्ति दो लेकिन मन, विचार से एक थे, एक-दूसरे पर दोनों का निस्मीम प्रेम था। 'संसाराची वाट' कविता में ज्योंतीराव के सहवास में सुखी संसार का स्वीकार करते हुए सावित्री किस प्रकार आनंदित है यह बताती है। विठ्ठल लांजेवार कहते हैं- ''जिस काल में स्त्री शिक्षा पर बंदी थी, उस काल में घर में पढ लिखकर कविता करने का सामर्थ्य, संपादन करनेवाली सावित्री नि:संशय अलौकिक प्रतिभा की धनी थी।''[५]

'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' (१८९२) सावित्रीबाई का यह दूसरा काव्य संग्रह है।

इस संग्रह की कविताएँ 'काव्य-फुले' की कविता से अधिक वैचारिक और प्रभुत्त्वपूर्ण लगती है। इन कविताओं में उनके चिंतनशील मन के अधिक व्यापक दर्शन होते हैं। इतिहास को खुली आँखो से देख उससे कुछ बोध लेकर ही अपना राह निश्चित करना चाहिए नहीं तो हम गुलामी से मुक्त नहीं हो सकेंगे, इस विचार से उन्होंने प्राचीन और मध्यकाल का इतिहास बताकर, रावबाजी पेशवा काल में अंद्ध:श्रद्धा के कारण निर्माण हुए सडे गले समाज का सशक्त चित्रा खींचा है।

सावित्री अपना बुद्धिदाता ज्योतीराव होकर उनसे ही प्रेरणा प्राप्त हुआ है यह बताते हुए नम्रपूर्वक कहती है-

''जयाचे मुळे मी कविता रचिते

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

जयाचे कृपे ब्रम्हा आनंद चिते।।

जयाने बुध्दी मिळे सावित्रीस

प्रणामा करिते स्वामी ज्योतिबास।।''[६]

इसे छ: विभागो में विभाजित किया हैं- १. उपोद्घात २.सिध्दता ३. पेशवाई ४. आंग्लाई ५. ज्योतीबा ६. उपसंहार आदि । उपोद्घात में चार कडवे समाविष्ट होकर इसमें गुलामी से त्रस्त स्त्री शूद्रों कों आहवान किया गया है। इस रचना का सूत्रा समर्पण भाव है। कवयित्री का चिंतन, कृतज्ञता, समृद्धता और भक्ति भावना से भरा व्यक्तित्व दिखता है। कृषिकन्या सावित्रीबाई 'मातीची ओवी' कविता में कहती है-

''काळसर माती पीक पाणी देती फळे फुले शोभती शिवारात

पांढरीला मळून कौले विटा करुन राहती घरे बांधून शिवारात।

मातीचा महिमा सांगावा किती हा मातीचे नाते अहा शिवारात।''[७]

सावित्रीबाई ने ग्रामीण जन संस्कृति के संवर्धन के संदर्भ में विधायक और आश्वासक चित्र खींचा है।

'ज्योतीबा' बावनकशी सुबोध रत्नाकर का पाँचवा भाग चौदह कडवों में समाविष्ठ है। इसमें स्त्री शुद्रादि शूद्र, कुनबी, किसान और सामान्य जनों के उत्थान का स्वप्न साकार करनेवाले ज्योतिबा का कार्य चरित्र समाविष्ठ है। विपरित परिस्थिति में भी संघर्ष करनेवाला ज्योतिबा का नायकत्व मन को आकर्षित करनेवाला है-

''तुकाराम जैसा तैसा संत जोती।

सुधा ज्ञान देई जना रीतिभाती।।

पुढारी क्रियाशील द्रष्टा प्रसिध्दी।

वंदे जोती रुढी असे ती असिध्दी।।''[८]

'उपसंहार' में केवल पाँच कडवे समाविष्ट हैं। इसमें ज्योतीबा के जीवन कार्य का चित्र साकार हो उठा है। राजाराम सुर्यवंशी के शब्दों में- '''सुबोध रत्नाकर' रचना के पीछे सावित्रीबाई की निष्ठ है इसमें शक नहीं। ज्योतिबा एक युग नायक होने के कारण उनके जीवन विचार, चरित्र, सामाजिक दृष्टिकोण आदि से यह रचना दीर्घ बन गयी है। ज्ञानज्योती युगस्त्री सावित्रीबाई का यह साहित्य निर्मिति यानी मराठी भाषा का सहज सुंदर साहित्य मंजूषा है।''[९]

कुल मिलाकर सावित्रीबाई ने अपनी कविता में संसार, प्रकृति, अंध:श्रध्दा निर्मूलन, रुढि परंपरा विरोध और जातिप्रथा आदि पर मंथन किया है। संसार के संबंध में कवयित्री कहती है। संसार रुपी रथ के दो पहिए है पति-पत्नी, संसार में दोनों को मिलकर ही चलना पडता है, इन पर घर की जम्मेदारी होती है। संसार के तान-तनाओं को झेलनेवाली गृहिणी को आत्मीयता से कवयित्री उपदेश करती है। 'संसाराची वाट' कविता में वह कहती है-

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

''शांतता आपली। ठेवावी प्रपंची

हीच वाट साची।संसारात।।''[१०]

सावित्रीबाई ने कुछ कविताओं में प्रकृति का सुंदर अंकन किया है। सावित्रीबाई आद्य पर्यावरणवादी कवयित्री थी। प्रकृति के प्रति उनके मन में दुर्दम्य आशावाद है क्योंकि प्रकृति और मानव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति से मानव को अन्न, हवा, पानी, औषधी वनस्पती और आनंदमय जीवन प्राप्त होता है। आधुनिक जीवन में बदलते परिवेश में मनुष्य को प्रकृति का खयाल रखना चाहिए। कवयित्री कहती है, प्रकृति और मानव दोनों एक ही शिक्के के दो बाजू हैं इसलिए प्रकृति की शोभा बढाने के लिए मनुष्य को हर पल प्रयत्न करते रहना चाहिए ऐसा संदेश प्रत्येक मानव को देती है।

मानव उन्नति के लिए, स्वार्थ के लिए प्रकृति पर हावी हो रहा है, फलस्वरुप जल, वायु प्रदुषण, बीमारी आदि नई समस्याएँ निर्माण हो रही हैं। प्रकृति को बचाना आज आवश्यक है, प्रकृति अगर जीवित है तो ही मानव जीवित रहनेवाला है। यह संदेश सावित्रीबाई ने डेढ सौ साल पहले दिया था। सावित्री कठोर विवेकवादी, बुद्धिवादी महिला थी। किसी भी अंध:श्रद्धा पर उनका विश्वास नहीं था। अंध:श्रध्दा पर तीखा व्यंग कर स्त्री शुद्रातिशुदों के लिए अपना स्वर्वस्व अर्पित कर दिया।

अंध:श्रध्दा के साथ-साथ कर्मसिध्दांत पर भी प्रहार करते हुए, 'मनू म्हणे' इस प्रबोधन पर कविता में सावित्रीबाई कहती है-

''नांगर धरती। शेती ती करती। मठठ ते असती। मनू म्हणे

शुद्र जन्म घेती। पूर्वीची पापे ती। जन्मी या फेडती। शुद्रतो

विषम रचनी। समाजाची रीती। धुर्तांची ही नीती। अमानव!! ''[११]

सावित्रीबाई की यह कविता कर्म सिध्दांत पर आक्रमण करनेवाली है। मनू ने किसान को अज्ञानी कहकर अज्ञान उन्हें जन्म से ही प्राप्त हुआ है, उन्हें वैसे ही रहना चाहिए कहा था, लेकिन इस धूर्त नीति से दूर रहने का संदेश कवयित्री ने दिया है।

पुराण कहती है ब्रह्म दुनिया का लालन-पालन करनेवाला है, तो शूद्र किसान भी खेती में काम कर अन्न उपजाता है और दुनिया का लालन-पालन करता है वह भी ब्रह्म ही नही क्या ? ऐसा सवाल उठाती है। 'ब्रह्मवंती शेती' कविता में कवयित्री कहती है।

''ब्रह्म असे शेती। अन्न धान्य देती।

अन्नास म्हणती। पर ब्रम्ह।।१।।

शुद्र करी शेती। म्हणुनिया खाती।

पक्वान झोडती। अहं लोक ।।२।।

दारुडे बोलती। तैसे ही वागती।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

मतलब नीती। वाचाळांची।।३।।

जे करिती शेती। विद्या संपादती

नया ज्ञानवंती। सुखी करी।।४।।''१२

राजाराम सुर्यवंशी के शब्दों में- ''केशवसुत को आधुनिक कविता का जनक कहा जाता है। लेकिन इससे चालीस साल पहले सावित्रीबाई का 'काव्यफुले' कविता संग्रह प्रकाशित हुआ था। मराठी साहित्य का आद्य प्रयत्न, मराठी साहित्य में आद्य आधुनिक कविता के रुप में उनकी कविता का महत्त्वपूर्ण स्थान है।''[१३]

सावित्रीबाई का जो साहित्य प्रकाश में आया है उसे देखकर कहा जा सकता है कि, उनके काव्य निर्मिति का प्रयोजन साहित्य निर्माण करना न होकर प्रमुख रुप से 'इंन्सान' के रुप में जीने का हक्क मिला देता है। सावित्रीबाई की काव्यरचना बहुत कुछ श्रेष्ठ न हो तो भी उनके काव्य निर्मिति के पीछे आंतरिक छटपट्टाहट के कारण रचनाएँ मौल्यवान लगती है।

१. डॉ.खरात माधवी- सावित्रीची साहित्य साधना, निरंतर शिक्षण त्रैमासिक, जनवरी २००३, पृ.१४,१५
२. डॉ. माळी मा.गो. काव्यफुले सावित्रीबाई फुले समग्र वाडमय, पृ.१७
३. डॉ. माळी मा.गो. बावनकशी सुबोध रत्नाकर, सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय, पृ.८६
४. डॉ. मा.गो. माळी- सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय (काव्यफुले) पृ.२४
५. लांजेवार विठ्ठल - युगस्त्री: सावित्रीबाई फुले, पृ.३८
६. सिध्दता- डॉ. मा.गो. माळी बावनकशी सुबोध रत्नाकर, सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय पृ.८१
७. डॉ. मा.गो. माळी- सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय (काव्यफुले) पृ.२४
८. जोतिबा- बावनकशी सुबोध रत्नाकर, सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय, पृ.८८
९. सुर्यवंशी राजाराम - युगस्त्री सावित्रीबाई फुले, पृ.११८
१०. संसाराची वाट- काव्यफुले, सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय, पृ.८
११. डॉ. माळी मा.गो. सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय (काव्यफुले) पृ.१९
१२. डॉ. माळी मा.गो. सावित्रीबाई फुले समग्र वाड्मय (काव्यफुले) पृ.२०
१३. सुर्यवंशी राजाराम - युगस्त्री सावित्रीबाई फुले, पृ.८४

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad